

## खिलजी साम्राज्य

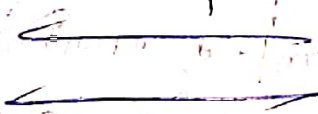
### उदय एवं विस्तार →

खिलजी साम्राज्य की स्थापना जलालउद्दीन खिलजी ने 70 वर्ष की अवस्था में 1290 ई० में की। तुंगरा खाँ के पुत्र कुतुबुद्दीन के समय से ही सल्तनत में अराजकता और अस्थिरता की स्थिति पैदा हो गई थी। शासन की सारी शक्ति निजामुद्दीन के हाथों में केन्द्रित हो गई थी। खानों के असंतोख और आपसी वैमनस्यता बढ़ गई थी। कुछ खानों ने जलालउद्दीन फिरोज खिलजी के नेतृत्व में ऐतमार कटखन और ऐतमार सुरखा को मार डाला। कुतुबुद्दीन के मार डाले जाने के बाद के पुत्र कुतुबुद्दीन के राज्य में हटा कर 13 जून - 1290 ई० को जलालउद्दीन फिरोज युक्तान बना।

खिलजी के नागरिकों ने जलालउद्दीन का उदर स्वागत नहीं किया। क्योंकि वह अफगान था। इसलिए उसने किलोखरी को अपनी राजधानी बनाया, लेकिन निजामुद्दीन बनी किलोखरी में उसे उसके सद्गुणों आभारप्रियता और समर्पण की भावना ने उसे खिलजी के नागरिकों का प्रिय बना दिया था। इस बड़े युक्तान को अपने शासन के दूसरे ही वर्ष में कलकत्ता के मतीज मलिक हज्जु के विद्रोह को सामना करना पड़ा। उसने विद्रोह को हरा दिया। और

मालिके वरुणु को माफ कर दिया। जमालउद्दीन की नीतियों के कारण कलकत्ता में सड़कें बनने लगीं।

जमालउद्दीन ने किसी साम्राज्यवादी नीति का पालन ही नहीं किया लेकिन राज बंधों पर असह्य आक्रमण किया। उसके समय में हमारा ही आक्रमण किया था तब उसने उसका सफलतापूर्वक मुकाबला किया था। उसने ने इस्लाम को स्वीकार कर दिया और दिल्ली के समीप अपने सभ्यता के स्थापन करे गया। इन नए मुसलमानों ने बाह्य में दिल्ली में खुद उपद्रव मचाया। यह शान्तिप्रिय शासक अपनी नीति नहीं मरा बल्कि इसके महत्वकांक्षी-प्रिय मतीजे आली-गुबीष को आगे चलाकर जमालउद्दीन दिल्ली के बाहर ही जाना गया, ने चोखे हैं 1296 ई के मार डाला।



*[Faint, illegible handwritten text, likely bleed-through from the reverse side of the page.]*